❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्।

– अथर्व. 7/18/2

जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।

Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 41, अंक 5 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 20 नवम्बर, 2017 से रविवार 26 नवम्बर, 2017

विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

मुगलों की हिंसक राजनीति की ओर सऊदी अरब

...देखा जाये तो नवम्बर माह के पहले सप्ताह में 24 घंटे के अन्दर अरब के शाही परिवार के 200 लोगों में 2 राजकुमारों की मौत के साथ 11 राजकुमारों को हिरासत में लिया जाना पूरा वाक्या भारत के मुगलकाल की याद ताजा करा रहा है जब आपसी मतभेद के चलते 1657 में शाहजहाँ के बीमार पड़ने के बाद मुगल शासक औरंगजेब ने अपने पिता को हिरासत में लेने के साथ अपने तीन भाइयों की हत्या करने के बाद सत्तासीन हो गया था। ....

सऊदी अरब विश्व का सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावी मुस्लिम देश है इसलिये यहाँ जो घटना घटती है वह न केवल अरब में बल्कि सामान्य रूप से इस्लाम और मुसलमानों के अन्य राज्य और प्रशासन को भी प्रभावित करती है। यह तथ्य है कि मुस्लिम बहुल देश बहुत कम संख्या में लोकतांत्रिक हैं और इस तथ्य का निष्कर्ष इस बात पर पहुँचने को प्रेरित करता है कि इस्लाम धर्म और उसके सामान्य तत्व अपने आप में भी लोकतंत्र से असंगत हैं। हाल ही में सऊदी अरब में एक नई भ्रष्टाचार निरोधक एजेंसी ने 11 राजकुमारों समेत 4 मंत्रियों और दर्जनों पूर्व मंत्रियों को हिरासत में ले लिया है। हिरासत में लिए गए लोगों में अरबपति प्रिंस अलवलीद बिन तलाल भी शामिल हैं। सऊदी अरब की राजनीति के जानकर कह रहे हैं अभी ये कहना बेहद मुश्किल है कि ये भ्रष्टाचार खत्म करने की दिशा में लिया गया कदम है या इस कारण से मोहम्मद बिन सलमान हर उस आखिरी रिश्तेदार को अपने रास्ते से हटा देना चाहते हैं जो भविष्य में उनके राजनीतिक वर्चस्व को चुनौती दे सके।

देखा जाये तो नवम्बर माह के पहले सप्ताह में 24 घंटे के अन्दर अरब के शाही परिवार के 200 लोगों में 2 राजकुमारों की मौत के साथ 11 राजकुमारों को हिरासत में लिया जाना पूरा वाक्या भारत के मुगलकाल की याद ताजा करा रहा है जब आपसी मतभेद के चलते 1657 में शाहजहाँ के बीमार पड़ने के बाद मुगल शासक औरंगजेब ने अपने पिता को हिरासत में लेने के साथ अपने तीन भाइयों की हत्या करने के बाद सत्तासीन हो गया था। कुछ इसी तरह मोहम्मद बिन सलमान की सत्ता की सीढ़ी चढ़ने की शुरुआत साल 2013 में तब हुई, जब उन्हें क्राउन प्रिंस कोर्ट का मुखिया चुना गया। इसके बाद जनवरी 2015 में किंग अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अजीज की मौत के बाद उसी दौरान पिछले दो सालों से यूरोप में रह रहे सऊदी अरब के तीन राजकुमारों का गायब होना, साथ ही 79 वर्ष की उम्र में किंग बने सलमान ने तत्काल दो ऐसे फैसले लिए जिसने सऊदी अरब की राजनीति को हैरान कर दिया था।

किंग सलमान ने पहला तो अपने बेटे मोहम्मद बिन सलमान को रक्षा मंत्री और मोहम्मद बिन नायेफ को डिप्टी क्राउन प्रिंस बनाने की घोषणा की थी। मोहम्मद बिन नायेफ, सउदी किंगडम के संस्थापक इब्न सउद के ऐसे पहले पोते थे, जो विरासत की कतार में आगे आए थे। पर फिलहाल देखा जाये तो अरब नगरिकों में, खास कर युवाओं में युवराज मोहम्मद बिन सलमान काफी लोकप्रिय हैं, लेकिन कहा जा रहा कि बुजुर्ग और रूढ़िवादी लोग उन्हें कम पसंद करते हैं। रूढ़िवादियों का मानना है कि वे कम समय में देश में अधिक बदलाव करना चाहते हैं। जिसके गम्भीर परिणाम हो सकते हैं। 31 अगस्त 1985 को जन्मे युवराज सलमान तत्कालीन प्रिंस सलमान बिन अब्दुल अजीज अल सऊदी की तीसरी पत्नी फहदाह बिन फलह बिन सुल्तान के सबसे बड़े बेटे हैं।

अरब के वर्तमान प्रसंग और इस्लामिक इतिहास पर यदि नजर डालें तो एक बात साफ होती है कि मुसलमान गैर आनुपातिक दृष्टि से तानाशाहों, उत्पीडकों, गैर निर्वाचित राष्ट्रपतियों, राजाओं, अमीरों और अनेक प्रकार के ताकतवर लोगों के शासन से शासित होते आये हैं और यह सत्य भी है। यहाँ तक की गरीब से गरीब और सबसे अमीर देशों में भी इस्लाम अत्यंत कम राजनितिक अधिकारों से जुड़ा है। अत: इसमें लोकतांत्रिक अधिकारों के विकास की सम्भावनायें हमेशा से ही कमजोर रही हैं। – शेष पृष्ठ 8 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में घर-घर यज्ञ – हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत

यज्ञ विधि – प्रक्रिया – एकरूपता– विशेषताओं तथा यज्ञ विज्ञान का सामान्य ज्ञान प्रदान करने हेतु

यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत आर्यसमाज कीर्ति नगर में बच्चों का शिविर सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में संचालित घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में श्रृंखलाबद्ध आयोजित पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आर्य समाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली द्वारा आर्य वीर दल के वीरों व वीरांगनाओं हेतु दिनांक 16 से 19 नवम्बर को आयोजित किया गया। शिविर में लगभग 90–100 सदस्यों ने यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस शिविर में लगभग 60–65 आर्य वीर व लगभग 20–25 वीरांगनाओं ने बड़ी जिज्ञासा पूर्वक यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शिविर संयोजक के विचार से इन शिविरों में आये हुए बहुत सारे सदस्यों को यह यज्ञ बहुत ही सरलता पूर्वक लगा तथा

यज्ञ से वातावरण व मन शुद्ध होगा, तथा पर्यावरण की मनुष्य द्वारा फैलाई और बनाई गई गंदगी की सफाई होती है *– आर्य वीरांगना पूजा आर्या (14 वर्ष)*

यज्ञ करने की विधि का प्रशिक्षण मिला तो बहुत कुछ नया सीखने के बाद मन को अच्छा लगा। उत्साह पैदा हुआ कि यह सरल व शुद्ध पद्धति से यज्ञ द्वारा बिना किसी सहयोग के हम प्रभु को याद कर सकते हैं और वातावरण को शुद्ध कर सकते हैं *– सुशील आर्य आर्य वीर (16 वर्ष)*

– शेष पृष्ठ 7 पर

यज्ञ हमारे लिए बहुत अच्छा है, हमे रोज यज्ञ करना चाहिए। यहां से मुझे यज्ञ सीखने का मौका मिला, मैं सभी का धन्यवाद करती हूं। मैं लोगों को प्रेरित भी करूंगी और स्वयं भी रोज यज्ञ करूंगी *– कु. रजनी (12 वर्ष)*

यज्ञ से क्या फायदे हैं क्या नुकसान यह यह मैंने इसी यज्ञ प्रशिक्षण शिविर में आकर जाना– *कृष्णा (17 वर्ष)*

वेद-स्वाध्याय

सच्ची योग महिमा

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः।। - *यजुः. 5/14*
ऋषिः **श्यावाश्व आत्रेयः।।** देवता - **सविता।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ - विपश्चितः = उस चित्स्वरूप **बृहतः विप्रस्य** = महान् ज्ञानी के **मनसा** = मन के साथ **विप्राः** = संसार के ज्ञानी लोग **मनः युञ्जते** = अपने मनको जोड़ते हैं, **उत धियःयुञ्जते** = और अपनी बुद्धियों को भी संयुक्त करते हैं। **वयुनावित्** = सबके ज्ञानों व कर्मो को जाननेवाला **एकः इत्**= वह अकेला ही **होत्रा** = इन सबके सत्यकर्मो को, यज्ञकर्मो को **वि दधे** = विविध प्रकार से धारण करता है। यह **सवितुः देवस्य** = इस सर्व-प्रेरक देव की **मही परिष्टुतिः** = महान् स्तुति, अद्भुत प्रशंसा की बात देखो।

विनय- विप्र लोग उस महान् विप्र के साथ अपना मन जोड़ते हैं। इसी का नाम योग है। ये योगी, ज्ञानी, महात्मा लोग केवल अपने मन को ही उस चिन्मय प्रभु के साथ नहीं जोड़ते अपितु बुद्धि को भी जोड़ते हैं। अपने क्षुद्र मन को उसके विभु मन के साथ जोड़ने से हमारा मन एकाग्र हो जाता है, रुक जाता है; और अपनी बुद्धि के उसमें जुड़ने से हमें उसके आत्मज्ञान में से हमारे लिए उपयोगी सत्यज्ञान भी मिलने लगता है। इस प्रकार योगी, सन्त-पुरुष उस सर्व-प्रेरक देव की प्रेरणा से प्रेरित होकर अपने सब कर्म किया करते हैं। उनके ये सब शारीरिक व मानसिक कर्म फिर उस परमदेव में आहुतिरूप होते हैं। प्रभु उन सबके उन होत्रों को स्वीकार करते जाते हैं और प्रतिदान में उन्हें उनके अनुकूल अपने ज्ञान को प्रेरित करते हैं। इस प्रकार उस एक महान् आत्मा में संसार के सब विप्र (सब साधु, महात्मा, योगी) हवन कर रहे हैं और अपना-अपना अभीष्ट पा रहे हैं। यह कितने आश्चर्य की बात है कि उस अकेले ही देवता ने अपने-आपको इन सब जीवात्माओं के साथ ठीक-ठीक न्याययुक्त सम्बन्ध से जोड़ रक्खा है और सम्बन्ध जुड़ने पर उस सम्बन्ध को परिपूर्णता के साथ निभा रहा है! वह कैसा वयुनावित् है कि अकेला ही इन सब प्राणियों के एक-एक ज्ञान व कर्म को अलग-अलग कैसे जान रहा है। तनिक देखो कि ये ज्ञानी पुरुष ही नहीं, किन्तु न जानते हुए अनिच्छा से तो संसार के प्राणिमात्र ही उस एक यज्ञपुरुष के साथ जुड़े हुए हैं और वह अकेला ही उन सब अनगिनत जीवों के साथ न जाने कैसे परिपूर्ण न्याय कर रहा है! ऐसे अद्भुत देव की, उस अकेले सर्व-प्रेरक देव की हम जितनी स्तुति करें वह थोड़ी है हम जितनी स्तुति करें वह थोड़ी है।

साभार-वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

योग से धार्मिक दहशत

...रफिया ने अपने धर्म और समाज के खिलाफ कोई काम नहीं किया है। बस योग किया और योग गुरु रामदेव के साथ मंच साझा किया। शायद इसी कारण कुतुबुद्दीन के मजहब को खतरा हो गया। हालाकि योग को इस्लाम के उसूलों के खिलाफ बताने वाले तथाकथित जानकारों की आंखें खोलते हुए इस्लाम के इन तथाकथित जानकारों की समझ पर करारा वार करते हुए इस्लाम की जन्म स्थली यानि सऊदी अरब ने योग को खेलकूद का दर्जा देकर अपनी कट्टरवादी सोच को बदलने का सराहनीय कदम उठाया है।...

जब खुद का ईमान कच्चा हो तो दूसरे के ईमान पर आप वैचारिक पत्थरबाजी कर सकते हैं। शायद देश के संविधान में बस यही लिखना बाकी रह गया जिसे कट्टरपंथ के उग्रदूत आजकल जगह-जगह अपने क्रिया कलापों से लिख रहे हैं। इसका ताजा उदाहरण रांची की रहने वाली योग टीचर रफिया नाज से बड़ा क्या होगा जो आजकल दहशत में है, वह बेहद डरी हुई, उनके घर पर कट्टरपंथी तत्व पत्थरबाजी कर रहे हैं कारण वह मुस्लिम होकर योग की क्लास ले रही है। लोगों को योग के माध्यम से स्वस्थ रहने का सन्देश दे रही है।

सब कहते हैं योग धर्मनिरपेक्ष है। उत्तम स्वास्थ पाने का सबसे सस्ता साधन है। पर पता नहीं एदारा-ए-शरिया, झारखंड के महासचिव कुतुबुद्दीन जैसे कुछ कट्टरपंथियों को रफिया नाज से परेशानी है या योग से! जो उसका विरोध कर योग को साम्प्रदायिक बना रहे हैं? जबकि रफिया ने अपने धर्म और समाज के खिलाफ कोई काम नहीं किया है। बस योग किया और योग गुरु रामदेव के साथ मंच साझा किया शायद इसी कारण कुतुबुद्दीन के मजहब को खतरा हो गया। हालाकि योग को इस्लाम के उसूलों के खिलाफ बताने वाले तथाकथित जानकारों की आंखें खोलते हुए इस्लाम के इन तथाकथित जानकारों की समझ पर करारा वार करते हुए इस्लाम की जन्मस्थली यानि सऊदी अरब ने योग को खेलकूद का दर्जा देकर अपनी कट्टरवादी सोच को बदलने का सराहनीय कदम उठाया है। सऊदी अरब का यह कदम दुनिया के सभी इस्लामी देशों के साथ-साथ भारत में कट्टरवादी सोच रखने वाले लोगों के लिए भी एक नसीहत है।

पर भारत में माहौल ऐसा हो गया जहाँ योग की कक्षाओं में ज्यादातर लोगों को इस बात का ध्यान रहना चाहिए कि क्या वह सही ढंग से सांस ले रहे हैं या क्या उनके पैर सही दिशा में हैं। लेकिन इसके उलट अपने देश में योग विरोधी इस मानसिकता ने एक ऐसा माहौल खड़ा कर दिया है कि योग के समय लोगों को इस बात की चिंता रहती है कि कहीं उसे कोई देख न ले। भले ही बहुत लोग आज योग का लाभ ले रहे हैं पर वहीं कुछ इस कशमकश में भी खड़े हैं कि क्या उन्हें योग की कक्षाओं में जाना चाहिए या नहीं? इससे उनका धर्म तो भ्रष्ट नहीं हो रहा है? दुनिया भर में कई मुस्लिम, ईसाई योग को लेकर इस तरह के संदेह जाहिर करते हैं।

साथ ही सवाल भी उठाये जा रहे हैं कि क्या योग किसी एक धर्म की जागीर है या योग पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार है या योग सिखाना या सीखना कोई पाप है? दरअसल, यह सवाल इसलिए उठ रहे हैं क्योंकि राफिया नाज जिसको योग के लिए किए कार्यों की वजह से कई जगह सम्मानित भी किया जा चुका है। आज मजहब ए इस्लाम के जानकर उसे न्यूज चैनल से लेकर सामाजिक जीवन में भी अपमानित करते दिखाई दे रहे हैं। समाचार पत्रों के मुताबिक राफिया के खिलाफ कट्टरपंथियों की तरफ से फतवा तक जारी कर उसको डराया और धमकाया जा रहा है।

देश हो या विदेश जहाँ तक हमने देखा योग से किसी भी देश के नागरिक को कोई एतराज नहीं है। यदि एतराज दिखाई दिया तो सिर्फ उनके मजहब के धर्मगुरुओं में है। बीबीसी की ओर से विलियम क्रीमर की एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी जिसमें उन्होंने योग को लेकर देश-विदेश में हुई बयानबाजी और इससे उत्पन्न दहशत को दिखाया था। वे कहते है कि दुनिया भर में कई मुस्लिम, ईसाई और यहूदी योग को लेकर इस तरह के संदेह जाहिर करते हैं। वे योग को हिन्दू धर्म से जुड़ी एक प्राचीन आध्यात्मिक साधना के रूप में देखते हैं। इस कारण साल 2012 में ब्रिटेन में एक योग क्लास को चर्च ने प्रतिबंधित कर दिया था।

जहाँ भारत समेत कई देशों में माना जाता है कि योग के जरिए आप प्रकृति से सही स्वरूप को पहचान और अपनी वास्तविक स्थिति के बारे में जान सकते हैं। इसके जरिये अपने अंत:करण से लेकर शारीरिक व्याधियां दूर कर सकते हैं वहीं कुछ लोग तो इसे जन्म-मृत्यु के बंधनों से छुटकारा पाने का साधन मानते हैं। ये सब ईसाइयत, इस्लाम और दूसरे धर्मो में मान्य है। साल 2013 के सितंबर में सैन डिएगो काउंटी कोर्ट ने फैसला दिया था कि हालांकि योग की जड़ में धर्म है, लेकिन उसके संशोधित रूप का अभ्यास और स्कूलों में उसकी शिक्षा देना एकदम सही है। उसी दौरान ईसाई संगठन नेशनल सेंटर फॉर लॉ एंड पॉलिसी के अध्यक्ष डीन ब्रॉयल्स ने कहा था कि पश्चिम में कई लोग योग को गैर धार्मिक इसलिए मानते हैं क्योंकि ये तर्क को बढ़ावा देता है। आध्यात्मिक योग पर ऐसे ही प्रतिबंध मलेशिया में भी है। कुछ जगह स्कूलों में पद्म आसान को ''क्रिस-क्रॉस एपल सॉस'' नाम दिया गया है और सूर्य नमस्कार का नाम बदलकर ''ओपनिंग सीक्वेंस'' हो गया है।

भले ही आज राफिया सुर्खियों में है। तमाम धमकियों और तमाम परेशानियों के बावजूद उसके हौसले बुलंद हैं लेकिन सवाल यह भी कि क्या अब मात्र स्वस्थ रहने के लिए भी हिन्दू और मुस्लिम में भेद होगा? यदि योग हिन्दू मुस्लिम है तो क्या अब दवा भी हिन्दू मुस्लिम होगी? दवा की शीशी पर लिखा होगा केवल हिन्दू प्रयोग हेतु? हालाँकि कट्टरपंथ का शिकार बन रहीं राफिया कह रही है कि मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है। योग सिखाकर मैं गरीब बच्चों और इंसानियत की सेवा ही तो करना चाह रही थी। पर लगातार मिल रही धमकियों और घर पर हुए पथराव के बाद से राफिया का परिवार दहशत में है। दरअसल इस दहशत का शिकार केवल रफिया नाज नहीं बल्कि देश-विदेश के अनेक वे लोग भी हैं जिन्हें कट्टरपंथी आसानी से अपना निशाना बना लेते हैं।

- ***सम्पादक***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

शिक्षा की पाठशाला में संस्कारों का कत्ल

...बच्चों को महंगे स्कूल और खर्च के लिए रकम देने से संस्कार नहीं आते हैं। यह भी देखना जरूरी है कि बच्चा किस ओर जा रहा है। घर में खुलापन होना चाहिए। बच्चों पर किसी तरह का अनावश्यक दबाव नहीं होना चाहिए। अगर यह होता है तो बच्चा अपना गुबार बाहर किसी दूसरे पर निकालता है।....

पांचवीं पास करने के बाद जब छटी क्लास में दाखिला लिया तो क्लास रूम के बाहर लिखा देखा ''विद्या विहीन पशु'' यानी ''विद्या के बिना मनुष्य पशु के सामान होता है।'' पर जब विद्या पाकर भी इन्सान हिंसक पशु जैसा व्यवहार करें तो उसे क्या लिखा जाना चाहिए? कहीं न कहीं इसे विद्या में खोट कहा जाना चाहिए। इसमें कोई कमी ही कही जा सकती हैं वरना भला क्यों एक 11वीं कक्षा का छात्र अपने जूनियर दूसरी क्लास के अपने से उम्र में बहुत छोटे 7 वर्षीय छात्र की गला रेतकर हत्या करता? सवाल यह भी उठना चाहिए कि शिक्षा के साथ संस्कार, नैतिकता ग्रहण करने गये एक नाबालिग छात्र के मन में इतनी क्रूरता इतनी हिंसा आई कहाँ से? रॉयन इंटरनैशनल स्कूल में प्रद्युम्न ठाकुर हत्या केस में आरोपी 11वीं कक्षा के हत्यारे छात्र को अब भारतीय न्यायप्रणाली जो भी सजा दे लेकिन प्रद्युम्न के माता-पिता को जो जीवन भर के लिए दु:ख मिला उसकी भरपाई नहीं हो सकती है। हत्यारे ने एक माँ की ममता को जीवन भर तड़फने के लिए छोड़ दिया।

कहा जा रहा है हत्यारा छात्र अधिकांश समय हताश रहता था। उसे परिजनों की ओर से दबाकर रखा जाता था। वह खुलकर नहीं बोलता था। इससे वह अंदर ही अंदर घुटन महसूस करता था। वह इस कदर कुंठित हो गया और कुंठा निकालने के लिए किसी दूसरे माता-पिता के सपनों का गला चाकुओं से रेत दिया। लेकिन सवाल फिर वही आता है कि आखिर ऐसे हालात क्यों पैदा हुए? कहीं ऐसा तो नहीं इन सब हालात के लिए हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली दोषी है? जिसमें तुलना, आगे निकलने की होड़ में बच्चों को धकेला जा रहा हो। उनके मासूम से मस्तिष्कों को प्रेशर कुकर बनाया जा रहा है। शायद यही कारण रहा होगा कि रॉयन स्कूल में प्रेशर कुकर बनाया गया जो शिक्षा के दबाव में फट गया जिसने एक मासूम को अपनी चपेट में ले लिया।

आधुनिकता में ओत-प्रोत लोग कहते हैं कि प्राचीन भारत का महिमामण्डन अब नहीं होना चाहिए लेकिन हमारा वर्तमान इतना खोखला हो चुका है कि अतीत से आत्मबल तलाशने के लिए प्राचीन शिक्षा प्रणाली का महिमामण्डन जरूरी हो जाता है। नये भारत को समझने के लिए, अतीत के भारत को जानने के गहन प्रयास जब तक नहीं होंगे तब ऐसी हिंसक घटनाओं से दो-चार होने से हमें कौन रोक सकता है। हमें समझना होगा कि हम सब हिंसा के शिकार हैं। हिंसा के चक्र में ही जीने के लिए अभिशप्त होते जा रहे हैं। इसलिए बड़े और महंगे स्कूलों का गुणगान करने से पहले इस हिंसा का चेहरा देख लीजिए जो भारत का भविष्य निगलने के लिए कतार में खड़ी है।

बच्चों को महंगे स्कूल और खर्च के लिए रकम देने से संस्कार नहीं आते हैं। यह भी देखना जरूरी है कि बच्चा किस ओर जा रहा है। घर में खुलापन होना चाहिए। बच्चों पर किसी तरह का अनावश्यक दबाव नहीं होना चाहिए। अगर यह होता है तो बच्चा अपना गुबार बाहर किसी दूसरे पर निकालता है। कामयाबी के चक्कर में आज बच्चे बहुत अकेले पड़ गए हैं। घरों में सन्नाटा पसर गया है। दिमाग पर जोर डालिए, सोचिये! आज मेट्रो शहरों में कितनी माओं की गोद में बच्चा देखते हैं। ऐसा नहीं है कि इनमें कोई माँ नहीं है, लेकिन भागती दौड़ती जिन्दगी ने इनकी गोद से बच्चे छीन लिए जिस कारण वे बच्चे या तो अकेलेपन में पल रहे हैं या फिर किसी दूसरे के सहारे। अधिकांश वह सहारा किराये का होता है। बिना संस्कार, बिना ममता, बिना वात्सल्य, बिना मातृत्व के पलता वह बच्चा भविष्य में क्या देगा यह आप बखूबी अंदाजा लगा सकते हैं।

आधुनिक भारत में शिक्षा प्रणाली और माता-पिता की सबसे बड़ी विफलताओं में दो कारण हैं, एक तो यह बच्चे की सीखने की क्षमताओं की पहचान करने में असमर्थता और जीवन के अंत में शैक्षणिक विफलता पर विचार करने में असमर्थ हैं। दूसरा आत्मनिरीक्षण कहा जाता है बच्चे के जीवन में माता-पिता और गुरु एक महत्वपूर्ण तत्व है। सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में शतपथ ब्राह्मण का हवाला देते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने कहा है मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद। अर्थात् जब तीन उत्तम शिक्षक यानी एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। यहाँ ज्ञानवान होने का अर्थ यह नहीं कि माता-पिता बड़े डॉक्टर, इंजीनियर या अन्य कोई बड़ा पद रखते हों बल्कि सामाजिकता, आध्यात्मिकता का इसमें गहन अर्थ छिपा है। हम प्राचीन समय में देखें तो पता चलेगा की उस दौर में शिक्षा प्रणाली सरल थी। प्राचीन समय में इसके तनावपूर्ण होने का भी कोई संकेत नही मिलता है। अब, भारत में शिक्षा प्रणाली बदल गयी है और आज के दौर में पढ़ाई तनावपूर्ण हो चुकी है।

इस बात को नकारा नहीं जा सकता है कि दबाव का एक बड़ा हिस्सा माता-पिता की तरफ से आता है। महाराष्ट्र और तमिलनाडु इसका उदाहरण हैं। जहाँ बच्चों पर उनके माता-पिता द्वारा हाई स्कूल में विज्ञान और गणित लेने के लिए बाध्य किया जाता है ताकि वह आगे चलकर डॉक्टर या इंजीनियर बन सकें। बच्चों के वाणिज्य या कला में रुचि के विकल्प को नकार दिया जाता है। अब भारत में शिक्षा चुनौतीपूर्ण, प्रतिस्पर्धात्मक हो चुकी है और परिणाम को ज्यादा महत्व दिया जाता है। बच्चों की योग्यता का मूल्यांकन शैक्षिक प्रदर्शन पर किया जाता है न कि नैतिक। बच्चे को असहमति का अधिकार है? लेकिन इसके उलट शिक्षा और व्यवहार में उसको समझाने और प्रेरणा देने की बजाय मजबूर किया जा रहा है।

स्कूल में छात्रों पर अच्छा प्रदर्शन और टॉप करने के लिए दबाव रहता है तो घरों में कई बार ये दबाव परिवार,भाई- बहन और समाज के कारण होता है। दबाव को लेकर उदास छात्र तनाव से ग्रसित होने के साथ ही पढ़ाई भी बीच में छोड़ देते हैं। ज्यादातर मामलों में, तनाव से प्रभावित छात्र आत्महत्या का विचार भी मन में लाते हैं और बाद में आत्महत्या कर भी लेते हैं। ये बात तो आप भी मानते होंगे कि बचपन की सीख जीवनभर साथ रहती है। बचपन की बातें और यादें हमेशा हमारे साथ बनी रहती हैं। ऐसे में ये माता-पिता की जिम्मेदारी बन जाती है कि वे अपने बच्चे को कम उम्र में ही उन बातों की आदत डाल दें, जो उसके आने वाले कल के लिए जरूरी हैं ताकि शिक्षा की पाठशाला में संस्कारों का कत्ल होने से बचाया जा सके।

-विनय आर्य

बोध कथा

अब तो अलख जगा बाबा!

गतांक से आगे -

उसके चले जाने पर अपने मंत्रियों को बुलाकर परामर्श किया कि इस लकड़हारे को क्या दिया जाय? परामर्श करने के पश्चात् निर्णय हुआ कि शहर के दक्षिण में राजा का चंदन के वृक्षों का जो वन है, वह लकड़हारे को दिया जावे। पदाधिकारियों को बुलाया गया, चन्दन के वृक्षों का वह वन लकड़हारे के नाम कर दिया। उसको सूचना दी गई।

कई वर्ष व्यतीत हो गये। राजा एक दिन अपने महल में बैठे थे कि लकड़हारे का ध्यान आया। प्रसन्नता के साथ उन्होंने सोचा-अब लकड़हारा बहुत धनी हो गया होगा। कई भवन तथा महल बनवा लिये होंगे, चलकर उसे देखना चाहिये। अपने मंत्रियों को साथ लेकर वह उस वन में गया, जो लकड़हारे को दिया था। किन्तु वहां कोई वन ही न था, न चन्दन का कोई वृक्ष। राजा ने घबराकर अपने मंत्रियों से पूछा-''अरे वह वन कहां है जो लकड़हारे को दिया था? किसी और स्थान पर होगा, तुम मुझे अन्य स्थान पर ले आये हो।''

मंत्रियों ने पदाधिकारियों की ओर देखा, पदाधिकारियों ने काग़ज़ों की ओर। छानबीन करके बोले-''महाराज! वह जंगल तो इसी स्थान पर था।''

राजा ने कहा-''फिर वह गया कहां?'' खोज करने पर कुछ दूरी पर चन्दन के कुछ वृक्ष दिखाई दिये। उसके पीछे बैठा हुआ लकड़हारा भी दिखाई दिया-निराश और उदास, विचारमग्न। राजा ने उसके पास जाकर पूछा-''अरे! तू चिन्ता में क्यों हैं?''

लकड़हारे ने प्रणाम करके कहा-''अन्नदाता! आपकी कृपा से इतने वर्ष तो कट गये, अब ये पेड़ रह गये हैं। थोड़े दिनों मे ये भी समाप्त हो जायेंगे। सोचता हूं, इसके पश्चात् क्या करूंगा?''

राजा ने आश्चर्यपूर्वक कहा-''वृक्ष तो थोड़े से रह गये हैं, शेष वृक्षों का क्या किया तूने?''लकड़हारा बोला-नित्य लकड़ी काटता हूं, कोयला बनाता हूं और बाजार में जाकर बेच देता हूं।''

राजा ने दु:ख के साथ कहा-''अरे भाग्यहीन! यह तुमने क्या किया? यह चन्दन की लकड़ी थी! जलाकर कोयला क्यों बना दिया?'' वह बोला-''चन्दन की लकड़ी क्या होती है?''

राजा बोला-''अच्छा होता, यदि तू जानता! अभी एक लकड़ी काट ला कोई दो-तीन फुट की और ले जा बाजार में। हां, कोयला न बनाना इसका।''

लकड़हारे ने वैसा ही किया। एक दुकानदार ने देखा-लकड़ी तो है असली चन्दन की और लकड़हारा है गंवार। बोला-''क्या लेगा इसका?''

लकड़हारे ने पूछा-''तुम क्या दोगे?'' उसने कहा-''एक रुपया।''

लकड़हारा आश्चर्य से चिल्लाकर बोला-''क्या? एक रुपया?''

दुकानदार समझा, यह जानता है; बोला-''दो रुपये।'' उसने और भी आश्चर्य से चिल्लाकर बोला-''दो रुपये?''

दूकानदार ने घबराकर कहा-'अच्छा चार रुपये।' वह चिल्लाया-"चार?''

कुछ दूरी पर एक दुकानदार खड़ा था। उसने देखा कि पहला दुकानदार एक मूल्यवान् वस्तु को कौड़ियों के भाव खरीद रहा है। उसे पुकारकर कहा-''अरे इधर आ। मैं दस रुपये दूंगा।''

लकड़हारे ने जब दस का नाम सुना तो सिर पकड़कर बैठ गया। चिल्ला उठा, धाड़ें मारकर रोने लगा। अब उसे ज्ञात हुआ कि जिस लकड़ी का वह कोयला बनाकर बेचता रहा है, कितनी मूल्यवान् थी और कितनी बड़ी सम्पत्ति का उसने विनाश कर दिया।

उसकी दशा पर, मूर्खता पर आपको करुणा आती है। किन्तु सुनो मेरे भाई! हम स्वयं भी तो उस लकड़हारे की भांति हैं। राजाओं के राजा उस परमात्मा ने न जाने किस बात से प्रसन्न होकर सांसों का यह चन्दन से पूर्ण वन हमें दिया था। हमने कुत्सित वासनाओं, घृणा, पाप की अग्नि से जलाकर इसे भस्मसात् कर दिया कितने मूल्यवान् हैं ये सांस, यह हमने समझा नहीं। सांसों का यह चन्दन-वृक्षों से पूर्ण वन, जिसे हमने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकर की आग में जलाकर कोयला बना दिया। परन्तु जो होना था, सो हो गया। अब तो रह गये चन्दन के थोड़े से वृक्ष- थोड़े से वर्ष रह गये हैं इस जीवन के ; शायद थोड़े महीने। आओ, इन्हीं का ठीक-ठीक उपयोग करो। यत्न करो कि तुम्हारा लोक और परलोक सुधर जाय।

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

यज्ञ में सस्वर मन्त्रपाठ के साथ चढ़ाया हवि असामान्य शक्ति वाला हो जाता है

..... यज्ञ परीक्षण आठ स्वस्थ जनों पर किया गया। प्रथम दिन बिना मन्त्र के तथा दूसरे दिन सस्वर मन्त्रोच्चार के साथ यज्ञ किया गया। इस बीच आठों जनों के विभिन्न परीक्षण जैसे हृदयगति, ई.ई.जी., ई.सी.जी., रक्तचाप, जी.एस.आर. आदि का अत्याधुनिक यन्त्रों से परीक्षण कर जाना गया कि यज्ञीय वातावरण, सूक्ष्मीकृत औषध आदि चारों पदार्थों एवं मन्त्रों के प्रभाव से हृदय गति शान्त हुई, शरीर का ताप 1° से. कम हुआ, जी.एस. आर. भी उस समय बढ़ा हुआ पाया गया। ई.सी.जी. का झुकाव बेस लाइन की तरफ था। ई.ई.जी. में भी लाभकर बदलाव पाया गया। डेल्टा मस्तिष्कीय तरंगों में कमी तथा 'अल्फा स्टेट' के कारण मानसिक शान्ति व स्थिरता इस प्रयोग-निरीक्षण में विशेष रूप से पायी गयी।.....

श्री गोलेच्छा जी ने अपने शोध-पत्र 'अग्निहोत्र इन द ट्रीटमेंट ऑफ अल्कोहोलिज्म' में लिखा है कि अग्नि होत्र एक वैदिक कर्मकाण्ड होते हुए भी पूर्ण वैज्ञानिक है। यज्ञ का मानवी मन-मस्तिष्क पर न्यूरोफिजियो लॉजिकल असर पड़ता है। ई.सी.जी. के अध्ययनों से पता चला है कि यज्ञ से डेल्टरा तरंगें कम तथा अल्फा तरंगे अधिक मात्रा में निकलने लगती हैं। अत: मन शान्त व स्थिर होता है।

अवसाद, तनाव, उन्माद, मिर्गी, स्नायुदौर्बल्य आदि मानसिक रोग यज्ञ से कम और नष्ट भी होते हैं। फ्रांसीसी चिकित्सक डॉ. हॉफकिन ने सिद्ध किया कि शक्कर (पीला) एवं घृत मिश्रण जलाने से भी अनेकों प्रकार के रोगाणु नष्ट होते तथा स्वर यन्त्र, ग्लैण्डस, हृदय तथा मस्तिष्क भी नैसर्गिक सुखों से परिपूर्ण हो जाते हैं।

शास्त्रों में यज्ञ से प्राणवायु की विधि का उल्लेख है। प्राणशक्ति की वृद्धि से मन:संस्थान सशक्त बनता है। प्रतिदिन उपरोक्त चार प्रकार के द्रव्यों के होम से प्राण संवर्द्धक शक्ति बढ़ती जाती है।

आधुनिक अनुसंधान से भी सिद्ध हुआ है कि होम में विलक्षण हीलिंग पावर एवं स्वास्थ्य संवर्द्धन क्षमता भी विद्यमान रहती है।

यूरोप, अमेरिका का एवं एशिया के कई देशों में यज्ञोपचार विधि के परिणाम बड़े ही अच्छे आ रहे हैं। पोलैण्ड, ब्राजील, पेरू, आस्ट्रेलिया एवं अफ्रीका के वैज्ञानिक भी इसमें गहन दिलचस्पी दिखा रहे हैं तथा इस पर अनेक अनुसंधान कर रहे हैं।

देखा गया है कि हवन करते समय हवन कुंड के चारों ओर एक विशेष प्रकार की ऊर्जा प्रवाहित होती है। यही ऊर्जा अपने आसपास के वातावरण में फैल कर हानिकर ऊर्जा को निष्क्रिय तथा लाभकर ऊर्जा की वृद्धि भी करती है। मन्त्रोच्चार पूर्वक किया गया यज्ञ विभिन्न स्तरों पर ऊर्जा का परिवर्तन कर मनुष्य, पशु, वृक्षादि पर उच्च स्तर का प्रभाव डालता है।

दिल्ली के वरिष्ठ वैज्ञानिकों डॉ. डब्लू. सेल्वामूर्ति ने अपने शोध-पत्र 'फिजियोलॉजिकल इफेक्ट्स ऑफ मन्त्राज ऑन माइण्ड एण्ड बॉडी' में लिखा है- ''अग्निहोत्र के मन्त्रों का मनुष्य की फिजियोलॉजी तथा नर्वस सिस्टम तन्त्रिका तन्त्र पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ता है। वे इसे न्यूरोफिजियोलॉजिकल प्रभाव कहते हैं।'' उन्होंने प्रमाणित किया है कि होम से शरीर का तापक्रम 1° से. कम हो जाता है। इससे मानसिक शान्ति मिलती है, तनाव दूर होता है और मस्तिष्क विश्रान्ति की अवस्था में पहुंच जाता है, जिसे वैज्ञानिक 'अल्फा स्टेट' कहते हैं, जिसे यज्ञ 20 प्रतिशत बढ़ाता है।

यज्ञ परीक्षण आठ स्वस्थ जनों पर किया गया। प्रथम दिन बिना मन्त्र के तथा दूसरे दिन सस्वर मन्त्रोच्चार के साथ यज्ञ किया गया। इस बीच आठों जनों के विभिन्न परीक्षण जैसे हृदयगति, ई.ई.जी., ई.सी.जी., रक्तचाप, जी.एस.आर. आदि का अत्याधुनिक यन्त्रों से परीक्षरण कर जाना गया कि यज्ञीय वातावरण, सूक्ष्मीकृत औषध आदि चारों पदार्थों एवं मन्त्रों के प्रभाव से हृदय गति शान्त हुई, शरीर का ताप 1° से. कम हुआ, जी.एस. आर. भी उस समय बढ़ा हुआ पाया गया। ई.सी.जी. का झुकाव बेस लाइन की तरफ था। ई.ई.जी. में भी लाभकर बदलाव पाया गया। डेल्टा मस्तिष्कीय तरंगों में कमी तथा 'अल्फा स्टेट' के कारण मानसिक शान्ति व स्थिरता इस प्रयोग-निरीक्षण में विशेष रूप से पायी गयी।

यज्ञ की प्रभावी क्षमता का प्रमुख कारण यह है कि यज्ञाग्नि के मन्त्रोच्चार के साथ पूर्वोक्त 4 प्रकार के पदार्थ आहुति विधि से डाला हुआ सूक्ष्म होकर लयबद्ध मन्त्रोच्चार से उत्पन्न उच्च आवृत्ति की ध्वनि तरंगों के साथ मिल जाती है। इस प्रकार उत्पन्न उच्चस्तरीय संयुक्त ऊर्जा तरंगों का स्थायी व दीर्घकाजिक प्रभाव बना रहता है।

अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. डार्वर्ड सिटगुल ने अपने अनुसंधान निष्कर्ष में बताया है कि अकेले 'गायत्री महामंत्र' में ही इतनी प्रचण्ड शक्ति है कि उसके सस्वर उच्चारण से मानसिक विक्षेमों दुर्भावनाओं आदि का (शीघ्र ही) शमन किया जा सकता है। उन्होंने गायत्री मन्त्र के सस्वरोच्चारण के एक ही सेकेन्ड में 1 लाख तरंगे उत्पन्न होने का मापन करके यह रहस्योद्घाटन किया है।

नवभारत टाइम्स पत्र 9/07 के अंकों के तीन लेखानुसार

1. पूर्व आया है कि चीन के किसान ने क्लासिकल संगीत से 7 प्रतिशत पैदावार बढ़ाई।

2. स्प्रिचुअलिटी से होती है स्ट्रेस बस्टिंग। इससे आपका जिन्दगी को देखने का तरीका बदलता एवं तनाव भी दूर हो जाता है।

3. कनाडा के शोधकर्त्ताओं के अनुसार म्यूजिक से याददाश्त, सीखने की क्षमता तथा आई.क्यू. तीनों ही बढ़ते जाते हैं।

अत: संगीत का मनुष्य शरीर व मन पर भी अति उत्तम प्रभाव सिद्ध हुआ। अत: यज्ञ समय का वैदिक मन्त्रों का सस्वर पाठ का लाभ कौन कह सकता है? सस्वर मन्त्र पाठ से स्वत: ही एक प्रकार का प्राणायाम होने लगता है। परिणामत: असीम दिव्य प्राण वायु वेद पाठियों के फेंफड़ों में भर जाती है। जो उन्हें निरोग बनाती है। 2. सूक्ष्म जो कुसंस्कारों का नाश और सुप्त दिव्य संस्कारों का जगाता व नये-नये पैदा करता चला जाता है तथा हमारे सूक्ष्म शरीर को पवित्र करता जाता है।

हवन की वैज्ञानिकता यह है कि स्थूल दिव्य अंश भौतिक शुद्धि तथा सूक्ष्म भाग आध्यात्मिक, आत्मिक शुद्धि करता जाता है। श्रद्धा, भक्ति एवं प्रेम से चढ़ाई आहुतियों के कलुषित विचारों का नाश एवं पवित्र विचार अभ्युदय व नि:श्रेयस की सिद्धि होती है।

मन्त्र के असर से हुत द्रव्य अति प्रभावशाली हो जाते हैं। दहन की सामान्य प्रक्रिया में अग्नि में हुत द्रव्य केवल साधारण सा लाभकारी होता है। परन्तु यज्ञ प्रक्रिया सस्वर मंत्र पाठ के साथ चढ़ाया हवि असामान्य शक्ति वाला हो जाता है। अत: भौतिक, मनोवैज्ञानिक व आत्मिक लाभ भी देती है। जैसाकि अमेरिकी डॉ. हावर्ड स्टिंगुल के गायत्री मन्त्र के सस्वर उच्चारण से प्रति सेकेण्ड 1 लाख तरंगें उत्पन्न होने का जिक्र अभी पूर्व ही हुआ है जो दुर्भावनाओं का नाशक व शान्ति दायक होता है। (अन्य मन्त्र पाठ भी इसी प्रकार लाभकारी हैं क्योंकि सब ईश्वरीय शब्द हैं।) होम की सूक्ष्म विद्युतीय तरंगें एक तरफ वातावरण को दिव्य बनाती जाती है तो वहीं दूसरी ओर मानव मन से ईर्ष्या, द्वेष, कुटिलता, पाप, अनीति, अत्याचार, वासना, तृष्णा आदि मानसिक विकारों एवं क्लेशों को भी दूर करती जाती हैं। आत्मा को शुद्ध, बलवान कर ईश्वरीय आनन्द भी प्राप्त कराता है। पृथ्वी का आधार यज्ञ है और यज्ञाधार अग्नि। हमें अग्नि से सदा ऊंचा उठने, प्रकाश देने की एवं प्रकाशमान बनने की शिक्षा मिलती है।

- वन्द्येश्वर मुमुक्षु वानप्रस्थ

साभार : वेद एवं यज्ञ के अनंत लाभ

देव यज्ञ (हवन) का महत्त्व

दुनियां के सब नर-नारी, रोजाना मिलकर हवन करो।
सबसे है विनय हमारी, रोजाना मिलकर हवन करो।।
हवन से अच्छा कर्म जगत में, कोई नहीं बताया है।
देव यज्ञ का महत्त्व हमें, ऋषि-मुनियों ने समझाया है
तुम बन जाओ तपधारी, रोजाना मिलकर हवन करो।
सबसे हैं विनय हमारी, रोजाना मिलकर हवन करो।।
गऊ घृत, सामग्री की, आहुतियां तुम अग्नि में दो।
बदले में सौ गुनी आक्सीजन, मित्रों अग्नि से लो।।
तुम लाभ उठाओ भारी, रोजाना मिलकर हवन करो।
सबसे है विनय हमारी, रोजाना मिलकर हवन करो।।
श्रद्धा से जब घृत सामग्री, हवन कुण्ड में डालोगे।
प्रभु का सच्चा प्यार आर्यो! निश्चित तुम फिर पा लोगे।।
इच्छाएं पूर्ण हों सारी, रोजाना मिलकर हवन करो।
सबसे है विनय हमारी, रोजाना मिलकर हवन करो।।
श्रीरामजी, श्रीकृष्णजी, हवन प्रतिदिन करते थे।
चंद्रगुप्त चाणक्य हवन से, पीर पराई हरते थे।।
जिनसे कुल दुनियां हारी, रोजाना मिलकर हवन करो।
सबसे है विनय हमारी, रोजाना मिलकर हवन करो।।
देवयज्ञ जो करता है, वह दु:खी कभी 'ना' होता है।।
बड़ा भाग्यशाली है याज्ञिक, बीज पुण्य के बोता है।
खुश होते प्रभु न्यायकारी, रोजाना मिलकर हवन करो।
सबसे है विनय हमारी, रोजाना मिलकर हवन करो।।
है मित्रो! बढ़ते प्रदूषण पर, मिल रोक लगाओ तुम।।
सुख पाओगे प्रेम पूर्वक, घर-घर यज्ञ रचाओ तुम।
फिर होगी 'ना' बीमारी, रोजाना मिलकर हवन करो।
सबसे है विनय हमारी, रोजाना मिलकर हवन करो।।
जगत गुरू ऋषि दयानन्द की, शिक्षाओं को मानो तुम।
जगहितकारी उस योगी को, ठीक तरह पहचानो तुम।
कह ''नन्दलाल'' प्रचारी, रोजाना मिलकर हवन करो।।
सबसे है विनय हमारी, रोजाना मिलकर हवन करो।।

- पं. नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक
ग्राम पो. बहीन, पलबल (हरियाणा), मो. 9813845774

20वां सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

आर्यसमाज की राष्ट्र रक्षा एवं राष्ट्र कल्याण में अहम भूमिका - सुरेश चन्द्र आर्य

वेद ज्ञान से विमुख होना ही रहा भारत की गुलामी का कारण – *विनय आर्य*

वेद ज्ञान से ही वैश्विक समस्याएं मिटाकर मानवता का कार्य किया जा सकता है - गुलाब चन्द कटारिया, गृहमंत्री राजस्थान

सत्यार्थ प्रकाश को आचरण में उतारने की आवश्यकता - *न्यायमूर्ति श्री एस.एस. कोठारी, लोकायुक्त*

बीसवें सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे गृहमंत्री राजस्थान सरकार श्री गुलाब चन्द कटारिया ने कहा कि 'वेद के ज्ञान से वैश्विक समस्याएं जैसे आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अनाचार, मिटाकर मानवता का कार्य किया जा सकता है।' अतिथि लोकायुक्त राजस्थान न्यायमूर्ति श्री एस. एस. कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'सत्यार्थ प्रकाश के ज्ञान को आचरण में उतारने की आवश्यकता है।' राष्ट्र निर्माण पार्टी दिल्ली के अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह ने आह्वान किया कि सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से पाखण्डों का खण्डन किया जाये। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय महोत्सव के वेद सम्मेलन में श्री कटारिया ने मेवाड़ की गौरवमयी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं संस्कृति में महर्षि देव दयानन्द सरस्वती के उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन के सम्पूर्ण करने को एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बताया। वेद मार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक ने वेद की ईश्वरीय ज्ञान है, विषय पर प्रमाणिक व्याख्यान देते हुए कहा कि विश्व के एनसाईक्लोपीडिया में भी विश्व स्तर पर वेदों को प्राचीनतम ग्रन्थ के रूप में सम्मानीय स्थान दिया गया है। वेद ही सभी भाषाओं की जननी है मूल स्रोत है।

20वें सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव पर उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते आर्य संन्यासी एवं सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी। इस अवसर पर मंचस्थ अतिथिगण श्री विजय शर्मा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय एवं अन्य अतिथिगण।

आह्वान किया कि वेदों के ज्ञान से नई पीढ़ी अपने चरित्र को उत्तम बनाकर राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बने। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने देश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का संदर्भ देते हुए कहा कि 'हमारे देश की वर्षों की गुलामी का मुख्य कारण वेदों से दूर होना है।' दिल्ली से पधारे अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान आचार्य श्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने राष्ट्र रक्षा और उसके सन्दर्भ में वैदिक चिन्तन पर मार्मिक प्रवचन प्रस्तुत किया। सीकर सांसद एवं न्यास के न्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी ने कहा कि 'सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने से समस्त भ्रान्तियां दूर हो जाती हैं। अत: सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाना है।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान एवं न्यास के न्यासी श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज की राष्ट्र रक्षा एवं राष्ट्र कल्याण में अहम भूमिका है। इस अवसर पर आर्य समाज भीलवाड़ा के प्रधान एवं न्यास के उपाध्यक्ष श्री विजय शर्मा ने

महिला सम्मेलन में डॉ. गायत्री पंवार जयपुर की वैदिक विदुषी एवं पूर्व विभागाध्यक्ष राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय ने कहा वेद का ओदश है मनुर्भव:। वेद मार्ग पर चलकर ही संभव है। डी.आई.जी. जेल प्रशासन डॉ. प्रीता भार्गव ने अपने वक्तव्य में कहा कि पुरुष दो नजरिये रखता हैं उसकी सोच अपनी मां, बहन, और पुत्री के लिए रक्षक की होती है जबकि अन्य महिलाओं के लिए अलग। सत्री एवं पुरुष एक दूसरे के पूरक बनकर परिवार और समाज के लिए सुख शान्ति एवं समृद्ध ला सकते हैं। अजमेर के पूर्व सांसद एवं प्रधान आर्य समाज अजमेर श्री रासासिंह रावत, आर्ष गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली के अधिष्ठाता स्वामी प्रणवानन्द ने कहाकि हम संकल्प लें कि अपने घर परिवार में बेटों की भांति ही बेटियों के साथ भी एक जैसा व्यवहार शिक्षा, धन सम्पत्ति आदि सभीक्षेत्रों में करेंगे। महिला सम्मेलन का संचालन आर्य समाज हिरणमगरी उदयपुर की मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने किया। संयोजक श्री सत्यप्रिय शास्त्री एवं सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन का संयोजन श्री जीववर्द्धन शास्त्री ने किया।

दयानन्द कन्या विद्यालय, हिरणमगरी, उदयपुर की छात्राओं ने स्वागत गान प्रस्तुत किया। रुड़की के श्री कल्याण वेदी ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ यज्ञ ब्रह्मा वेद मार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक ने आध्यात्मिक प्रवचन में यज्ञ द्वारा पर्यावरण सन्तुलन के महत्व पर प्रकाश डाला। जादूगर राज तिलक ने अन्ध विश्वास पर प्रहार करते हुए रोचक जादू प्रस्तुत किये। न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने कहा इस महोत्सव ने वैदिक संस्कृति से जन-जन को परिचित करवा राष्ट्र भक्ति, महिला सशक्तिकरण एवं अन्ध विश्वास निर्मूलन में सार्थक भूमिका निभाई ही है साथ ही महर्षि देव दयाननद सरस्वती के कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को घर-घर पहुंचाने में कारगर सिद्ध हुआ है। संयुक्त मंत्री डॉ अमृत लाल तापड़िया ने आभार व्यक्त किया। - ***अशोक आर्य, का. अध्यक्ष***

अजमेर में 134वां भव्य ऋषि मेला सम्पन्न

परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान में 25 से 29 अक्टूबर 2017 के बीच महर्षि दयानन्द सरस्वती के 134वें बलिदान दिवस समारोह के अवसर पर भव्य ऋषि मेले का आयोजन किया गया। मेले का शुभारम्भ यजुर्वेद पारायण यज्ञ से हुआ यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश थे। महर्षि दयाानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया। यज्ञ में परोपकारिणी सभा के पदाधिकारी एवं सदस्यों भे सपरिवार भाग लिया। यज्ञोपरान्त ऋषि मेले का शुभारम्भ महर्षि दयानन्द सरस्वती भवन के प्रांगण में सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. सुरेन्द्र कुमार द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। देश में समाज सुधार, दशा और दिशा, राष्ट्र निर्माण में आर्य समाज की भूमिका, धर्मनिरपेक्षता और मत-मतान्तर, राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका, 21वीं सदी और महर्षि दयानन्द, आचार्य धर्मवीर वेद प्रचार, शिक्षा का महत्त्व और चुनौतियां, स्वामी श्रद्धानन्द संन्यास एवं गुरुकुलों की प्रासंगिकता विषयों पर सम्मेलन आयोजित किये गये। 30वीं अन्तर्राष्ट्रीय वेद गोष्ठी 2017 का विषय वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त रहा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने गोष्ठी का उद्घाटन किया। आचार्या सूर्यादेवी अध्यक्ष रहीं। इस गोष्ठी में कुल 34 विद्वानों ने भाग लिया एवं पत्रवाचन किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि 'आर्य समाज के उन्नयन एवं विकास के लिए विशेष कर युवा पीढ़ी को जाग्रत करने के लिए इस प्रकार के मेलों का आयोजन बहुत जरूरी होता जा रहा है।'

मेले में विद्वानों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया तथा वेदपाठ प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इस बार अजमेर एवं राजस्थान के अन्य स्थानों से लगभग 1125 तथा अन्य क्षेत्रों से 1166 लोग उपस्थित हुए। आमंत्रित विद्वानों, संन्यासियों, आर्यवीरों, कार्यकर्ताओं, कर्मचारियों की संख्या 400 के लगभग रही।

- ***मन्त्री***

अजमेर में आयोजित 134वें निर्वाणोत्सव समारोह के अवसर पर आर्यजनों को सम्बोधित करते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी।

Veda Prarthana - 20

Always Make Effort to Be Virtuous and Excel in Life

- Acharya Gyaneshwarya

उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते
दक्षतातिं कृणोमि।
आ हि रोहेममृतं सुखं
रथमथजिर्विर्विदथमा वदासि।।

Udyanam te purusha navaya nam jivatum te dakshatatim kranomi. A hi roha imam amritam sukham ratham atha jirvih vidtham avadasi.

(Atharva Veda 8:1:6)

This message is from God to human beings:

Purusha O human being te you udyanam have to rise and excel in life, na avayanam not have a downfall, dakshatatim kranomi I (God) have given you wisdom, strength and courage te jivatum for you to live virtuously and successfully. A hi roha become the master of (climb on) sukham ratham your physicalb ody (chariot) which can give you happiness in life imam amritam and is also capable of giving you moksha and bliss, atha afterwards, jirkih beome a capable devotee of Me (God) vidtham avadasi and teach others to follow a similar path.

The message from God in this mantra is, O human beings! Your goal in life must be to rise higher progress and excel. Moreover, you must not go downwards and regress in life. There are times in life when a person despite trying hard does not achieve full success or even fails to accomplish a planned goal which will advance him/her in postitve direction at work, school or personal life. Subsequently, many such persons get discouraged, disappointed, defeated, depressed and/or emotionally paralyzed. They lose their hope and will power as well as do not have the courage left to re-plan and try again even though the original goal was virtuous and laudable. Many persons develop a firm (though wrong) belief that I am incapable of succeeding in this goal because I am not sufficiently bright, strong and/or my resources are inadequate. others start to believe that the goal itself is impossible or not worthy of continuing pursuit just in the manner Arjun (a) felt at the beginning of Mahabharat (a) War and in Gita complained to Krishn(a), "Why should I participate in this destructive war where many loved ones and innocent persons will be killed. I have no desire left to fight."

This mantra gives a strong encouragement to such discouraged, disappointed, emotionally exhausted persons. God states that O human being! I have given you the same potential capabilities which I gave to rishis, seers, mahatmas i.e. great souls and heroes in the past. What one person can achieve, another person can also succeed in achieving the same if he/she if one develops a deep desire and becomes motivated to work hard, gathers all available resources and uses them properly with the guidance of capable gurus/teachers and guides. You will achieve success only if you first make a deep commitment even before starting and then following up by working hard and doing your utmost. Once you are motivated, inspired and persistent you will find a way to overcome any obstacles that arise along the way and succeed in reaching your goal.

Those who want to succeed in life not only have to work hard and make extra effort, but also have to give up laziness or a life of ease and comfort, and lose some sleep if necessary. Success in life does not simply fall in one's lap. People who succed in life have only two hands. two eyes and a similar physical body just like the rest of us. They, however, succeed because they exercise their will power and discipline their mind, intellect, senses and body to become strong and follow virtue while moving away from distractions and vices.

God, our Supreme Father in this Veda mantra advises us, O human beings! I have given you your physical body, mind, intellect and knowledge to reach our goal of attaining moksha i.e. attaining God realization and bliss. You need to achieve this goal not only yourself but you should lead, inspire and show the way to others those who are ignorant, have limited resources as well as those who are financially well off but are spiritually lacking due to being lost in the fulfillment of sensual pleasures and vices. You have to guide and direct such persons to a path where one lives simply, practices true yoga and does virtuous deeds so they may also progress towards attaining moksha. Therfore, O true devotees, let us come together and sincerely pray to Omnipresent God (who resides even inside the soul) to awaken our soul and give us wisdom and knowledge. May God bless us and help guide us towards attaining moksha ourselves as well as help others along the way.

(To get rid of your discouragement in life : also see mantra #13)

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें

शब्दार्थ - 31 (अ)
विभिन्न पदार्थों व क्रियाओं के नाम

गतांक से आगे....

नमस्कार:।	जलसेचकम् ।	नारङ्ग फलम् ।
पादत्राणम् (पादरक्षक:)।	द्वारम् ।	आम्र फलम् ।
युतकम् ।	भुशुण्डिका।(बु?) ।	द्राक्षाफलाणि ।
स्यूत:।	आणि: ।	कदली फलम् ।
ऊरुकम् ।	ताडकम् ।	रक्तफलम् ।
उपनेत्रम् ।	गुलिका/औषधम् ।	ज्वालामुखी ।
वज्रम् (रत्नम्)।	धनम् ।	मूषक: ।
सान्द्रमुद्रिका ।	पत्रम् ।	अश्व: ।
घण्टा ।	पत्रपेटिका ।	गर्दभ: ।
ताल:।	कर्गजम्/कागदम् ।	वराह: ।
कुञ्चिका ।	सूचिपत्रम् ।	वनवराह: ।
घटी।	दिनदर्शिका ।	मधुकर:/षट्पद: ।
विद्युद्दीप:।	कर्त्तरी ।	मूषिक: ।
करदीप:।	पुस्तकाणि ।	गज: ।
विद्युत्कोष:।	वर्णा: ।	अवि: ।
छूरिका ।	दूरदर्शकम् ।	वानर:/मर्कट: ।
अङ्कनी ।	सूक्ष्मदर्शकम् ।	सर्प: ।
पुस्तकम् ।	पत्रिका ।	मीन: ।
कन्दुकम् ।	सङ्गीतम् ।	बिडाल:/मार्जार:ध्ल: ।
चषक:।	पारितोषकम् ।	गौमाता ।
चमसौ (द्वि.व)।	पादकन्दुकम् ।	मकर: ।
चित्रग्राहकम् ।	चायम् ।	उष्ट्र: ।
सङ्गणकम् ।	पनीयम्/सूप: ।	पाटलम् ।
जङ्गमदूरवाणी ।	रोटिका ।	जपाकुसुमम् ।
स्थिरदूरवाणी ।	पयोहिम: ।	पर्णम् ।
ध्वनिवर्धकम् ।	मधु ।	
समयसूचकम् ।	सेवफलम् ।	
हस्तघटी ।	कलिङ्ग फलम् ।	

- क्रमश: -

आ० सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।- ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

प्रेरक प्रसंग

मुझे यही अच्छा लगता है

पण्डित शान्ति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी एक बार लेखरामनगर (कादियाँ - वर्तमान पाकिस्तान) पधारे। उनपर उन दिनों अर्थ-संकट बहुत था। सादा तो वे रहते ही थे, परन्तु उस समय उनका जूता बहुत टूटा हुआ था। वहाँ एक डॉक्टर जगन्नाथ जी ने उनका टूटा हुआ जूता देखकर आर्य समाज के मन्त्री श्री रोशनलाल जी से कहा कि पण्डित जी का जूता बहुत टूटा हुआ है। यह अच्छा नहीं लगता। मुझ से पण्डित जी लेंगे नहीं। आप उन्हें आग्रह करें। मैं उन्हें एक अच्छा जूता लेकर देना चाहता हूँ।

श्री रोशनलाल जी ने पूज्य पंडित जी से यह विनती की। त्यागमूर्ति पण्डित जी का उत्तर था वे डॉक्टर हैं। उनकी बात और है मुझे तो यही जूता अच्छा लगता है। मुझे पता है कि सभा से प्राप्त होने वाली मासिक दक्षिणा से इस मास घर में किस का जूता लेना है, किसके वस्त्र बनाने हैं और किसकी फीस देनी है। जब मेरे नया जूता लेने की बारी आएगी, मैं ले लूँगा।

ऐसे तपस्वियों ने, ऐसे पूज्य पुरुषों ने, ऐसे लगनशील साधकों और सादगी की मूर्त्तियों ने समाज का गौरव बढ़ाया इनके कारण युग बदला है। इन्होंने नवजागरण का शंख घर-घर, गली-गली, द्वार-द्वार पर जाकर बजाया है। समाज इनका सदा ऋणी रहेगा।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्य समाज अशोक विहार फेज-1 का

44वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज अशोक विहार फेज-1 दिल्ली अपना 44वां वार्षिकोत्सव 29 नवम्बर से 3 दिसम्बर के बीच आयोजित कर रहा है। प्रभात फेरी 26 नवम्बर प्रात: 6:30 बजे निकाली जाएगी। कार्यक्रम में यजुर्वेद पारायण यज्ञ, भजन एवं वेद कथा, बच्चों द्वारा वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। यज्ञ ब्रह्मा डॉ. जयेन्द्र कुमार व पारितोषिक वितरण श्री रविन्द्र मित्तल प्रमुख समाज सेवी करेंगे। मुख्य वक्ता डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. जयेन्द्र कुमार, डॉ. देवकृष्ण दास जी होंगे।

-जीवनलाल आर्य, मंत्री

वैदिक कन्या महाविद्यालय तेलंगाणा का 14वां वार्षिकोत्सव

वैदिक कन्या महाविद्यालय तेलंगाणा 14वां वार्षिकोत्सव 3 दिसम्बर प्रात: 8:30 से 2:00 बजे के मध्य आयोजित कर रहा है। मुख्यातिथि योगाचार्य धर्मवीर जी होंगे तथा अनेक विद्वत्गण पधारेंगे। *-प्रधान*

99वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज विदिशा (म.प्र.),महिला आर्य समाज एवं आर्य वीर दल का संयुक्त 99वां वार्षिकोत्सव 1 से 3 दिसम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम के अन्तर्गत सामवेद पारायण यज्ञ, भजन, वेदोपदेश एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। *-विश्वेन्द्र आर्य*

53वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल का 53वां वार्षिकोत्सव 1 से 4 नवम्बर के बीच धूमधाम से सम्पन्न हुआ। आचार्य यज्ञवीर शास्त्री के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इस महायज्ञ में आचार्य प्रेम शंकर मिश्र, आचार्य पवनवीर, आचार्य रघुबीर वेदालंकार, स्वामी शिवानन्द, आदि ने वेद मंत्रों की व्याख्याएं करके श्रद्धालु यजमानों को यज्ञ करने की प्रतिज्ञाएं करायी। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष ठा. विक्रम सिंह ने अपने जोरदार वक्तव्य में राष्ट्र रक्षा के लिए आह्वान किया। आचार्य इन्द्र पाल एवं राणा शास्त्री जी की अध्यक्षता में व्यायाम सम्मेलन में शक्ति प्रदर्शन किया। *-प्रबन्धक*

134वां निर्वाण दिवस सम्पन्न

इन्दौर संभाग के समस्त आर्य समाजों के संयुक्त तत्त्वावधान एवं श्री गोविन्द जी आर्य की अध्यक्षता में आर्य समाज मल्हार गंज इन्दौर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 134वां निर्वाण दिवस आयोजित किया गया। इस अवसर पर आचार्य चन्द्रमति याज्ञिक के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य ने प्रेरणाप्रद उद्बोधन में कहा 'यूं तो अनेकों ऋषि-मुनियों ने इस धरती पर जन्म लेकर इस मानव समाज को नई दिशा देने का कार्य किया है परन्तु उन सभी महापुरुषों में सबसे आगे नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती का आता है।' समारोह में बाल नाटक एवं बच्चों द्वारा प्रस्तुत प्रेरक गीत मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहे।

- आचार्य याग्निक

38वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज साकेत का 38वां वार्षिकोत्सव 23 से 29 अक्टूबर के मध्य हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह के अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री, पूर्व मंत्री दिल्ली सरकार तथा मुख्य वक्ता श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा थे। इस अवसर पर 12वीं कक्षा के छात्रों को छात्रवृत्ति दी गई तथा नवचेतना शिविर में आई आसाम की छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। आर्य समाज साकेत के संरक्षक, डॉ. पूर्ण सिंह डबास को इस अवसर पर शॉल, स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

-धर्मवीर पंवार, मंत्री

विश्व वेद सम्मेलन का आयोजन

1 से 17 दिसम्बर 2017 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, 1, जनपथ इण्डिया गेट के पास, नई दिल्ली में विश्व वेद सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में भारत व विश्व के विभिन्न देशों से अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अनेक वैदिक विद्वान भाग लेंगे व विश्व के समक्ष विद्यमान वर्तमान चुनौतियों जैसे-गरीबी, बीमारी, अशिक्षा, जलवायु परिवर्तन, मानव अधिकारों की रक्षा आदि के संदर्भ में वेदों की प्रासंगिता के विषय में विचार विमर्श कर एक वैदिक घोषणा पत्र जारी किया जाएगा। सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागियों का पंजीकरण कराना आवश्यक है। पंजीकरण कराने के लिए डॉ. देवेश प्रकाश आर्य मो. 09968573439 से सम्पर्क करें।

-डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, संयोजक

प्रथम पृष्ठ का शेष

यज्ञ में शुद्धता करने हेतु हर व्यक्ति को यह प्रयास करना चाहिए ऐसा प्रशिक्षणार्थियों ने महसूस किया। यज्ञ को सीखने के पश्चात् हम अपने घरों में परिवार के साथ बैठकर यज्ञ सम्पन्न कर सकते हैं इससे वायु मण्डल साफ होगा तथा हर जीव के लिए लाभदायक होगा। यज्ञ करने से कीटाणु मरते हैं तथा आसअड़ोस-पड़ोस में भी अच्छा लगेगा।

इस शिविर में 7 साल की इच्छा आर्या व 8 वर्षीय आर्यन आर्या ने भी जिद्द करके अग्नि प्रज्ज्वलित करने हेतु यज्ञ किया। शिविर को सफल बनाने में आर्य समाज कीर्तिनगर के अधिकारियों व आर्यवीर दल के शिक्षक श्री सुरेश आर्य, अधिष्ठाता श्री विट्टू आर्य, आयोजक सर्वश्री राजू आर्य, सुशील आर्य, रोशन आर्य, निरंजन आर्य, सुचित आर्य, मनीष आर्य, राजकुमार आर्य, नीरज आर्य, सागर आर्य, तथा अन्य आर्यवीरों ने पूरा योगदान दिया। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सत्य प्रकाश, यज्ञ सम्बन्धी पावरपॉईट पर श्री सौरभ यादव व श्री संदीप आर्य ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया यज्ञ सम्बन्धी वैज्ञानिक जानकारी विस्तार से समझाने में तथा प्रशिक्षण में सभा महामंत्री श्री विनय आर्य का विशेष योगदान रहा।

- सतीश चढ्ढा, संयोजक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत

केरल में स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर-2

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत केरल में 9 दिवसीय स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर-2 का **20-28 मार्च 2018** में आयोजन किया जा रहा है। **कुल यात्रा व्यय हवाई जहाज से 17500/- रुपये है।** इसमें होटल आवास, भोजन एवं हवाई यात्रा दो दिन मुन्नार एवं एक दिन ऐलैपी बैक वाटर्स भ्रमण भी सम्मिलित है। 4 दिवसीय स्वाध्याय शिविर में **महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान केन्द्र कालीकट** में आयोजित होगा जिसमें विभिन्न वैदिक विद्वानों द्वारा स्वाध्याय एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। सीमित 40 सीटें। पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर व्यवस्था। प्रस्थान हवाई जहाज से 20 मार्च की प्रात: तथा वापसी 28 मार्च की रात्रि में होगी। जो आर्यजन शिविर में सम्मिलित होना चाहते हैं वे **श्री शिव कुमार मदान, यात्रा संयोजक (मो. नं. 9310474979)** से सम्पर्क करें। **-महामन्त्री**

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन

1 अप्रैल, 2018 को मनाएं अधिकतम संख्या दिवस

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी-अपनी आर्यसमाज के यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि इस हेतु अपनी तैयारियां करें। अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। इस सम्बन्ध में सभा द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश शीघ्र जारी किए जाएंगे। सभा की ओर से सब आर्यसमाजों अपेक्षित सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। इस दिन को अपनी आर्यसमाज का ऐतिहासिक दिन बनाएं। अत: अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। *- विनय आर्य, महामन्त्री*

वैवाहिक विज्ञापन

आर्य वधू चाहिए

दिल्ली के प्रतिष्ठित आर्य परिवार के युवक, एम.सी.ए., डिप्लोमा (फोटोग्राफी), 30 वर्ष, लम्बाई 5'8'', सांवला, फोटोग्राफर, शाकाहारी, आय औसतन 50 हजार मसिक, हेतु आर्य परिवार की समकक्ष, सुशिक्षित वधू चाहिए। जाति-दहेज का कोई बन्धन नहीं। इच्छुक परिवार सम्पर्क करें-

मो. 9643152079, 9868997599, 9873988003, 011-27018041

Email : rajeev98739@gmail.com, savita595@gmail.com

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों को विदित ही है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ **'मैं आर्य समाजी कैसे बना'** आरम्भ किया गया था। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा जो किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बनें। यह स्तम्भ पुन: आरम्भ किया जा रहा है। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha @ yahoo. com पर ईमेल करें। हमारा पता है-

'सम्पादक', आर्य सन्देश
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज कीर्ति नगर

प्रधान : श्री ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री : श्री सतीश चड्डा
कोषाध्यक्ष : श्री सुरेश तेजी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का

व्हाट्एप्प मोबाइल

आओ जुड़ें - साझा करें विचार

मनुस्मृति

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

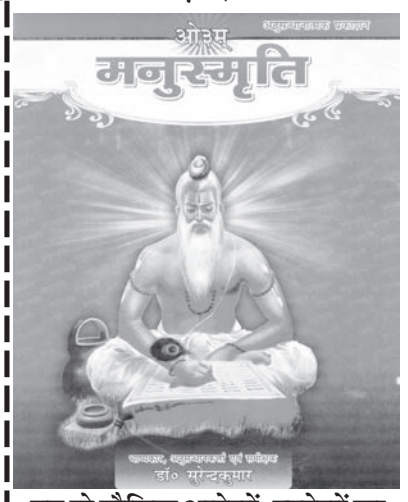

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

महर्षि दयानन्द कृत अर्थ एवं भावार्थ सहित

मूल्य : 600/-

विशेष छूट के साथ : 500/- में

(डाक व्यय अतिरिक्त)

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 20 नवम्बर, 2017 से रविवार 26 नवम्बर, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 23–24 नवम्बर, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 नवम्बर, 2017

प्रथम पृष्ठ का शेष

मुगलों की हिंसक राजनीति की .....

जिसमें जिम्मेदार खुद इस्लामी धर्मगुरु भी दिखाई देते हैं। जो लोकतंत्र के प्रति प्राथमिक प्रतिक्रिया देते हुए इसे गैर इस्लामिक घोषित करते हैं।

सऊदी अरब में सख्त इस्लामिक कानून लागू है। इसके तहत हत्या, ड्रग तस्करी, दुष्कर्म जैसे मामलों में मौत की सजा का प्रावधान है। लेकिन 2014 में वहां राजकुमार अल कबीर को मौत की सजा का फरमान सुनाया जाना शाही परिवार के सदस्यों को मौत की सजा मिलना एक दुर्लभ घटना है। इससे पहले शाही परिवार के किसी सदस्य को मौत की सजा का आखिरी मामला साल 1975 में सामने आया था। हालाँकि सऊदी अरब के बारे में कहा जाता है कि वह सर्वाधिक अपारदर्शी और अस्वाभाविक देश है जहाँ पर कोई भी सार्वजनिक फिल्मी थियेटर नहीं है, जहाँ महिलाओं को वाहन चलाने का अधिकार अगले साल से मिलेगा, जहाँ पुरुष महिलाओं के अंत:वस्त्र बेचते हैं और वहां शासक लोकतंत्र की एक सामान्य सी व्यवस्था का भी विरोध करते हैं। मक्का और मदीना पर नियंत्रण, इस्लाम की वहाबी व्याख्या का विस्तार और विश्व के सबसे बडे पेट्रोलियम भाग पर अपना कब्जा बनाये रखना, वहाबीवाद इसकी वैश्विक महत्वाकाँक्षा को प्रेरित करता है।

प्रिंस सुलेमान आज अरब में आधुनिकता के साथ सुधार की बाते कर रहे हैं लेकिन नव सुधारवादी प्रिंस के फैसलों से ऐसा कुछ प्रतीत नहीं हो रहा हैं जबकि इसे अपने मध्यकालीन पूर्वजों से अच्छा करना होगा और अपने धर्मग्रंथों की व्याख्या वर्तमान समय के अनुसार करनी होगी। यदि प्रिंस अपने मजहब को आधुनिक बनाना चाहते हैं तो उन्हें गुलामी, ब्याज, महिलाओं के साथ व्यवहार, इस्लाम को छोड़ने के अधिकार के साथ अन्य मामलों में अपने अन्य एकेश्वरवादियों प्रजातांत्रिक राष्ट्रों की तरह आचरण का पालन करना होगा। क्योंकि वर्तमान समय में इस्लाम एक पिछड़ा, आक्रामक और हिंसक शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है इसके बाद ही एक सुधरा हुआ इस्लाम उभर सकता है। हालाँकि सऊदी अरब में हालात तेजी से बदल रहे हैं और अरब जगत का सबसे बड़ा देश एक संप्रभु राष्ट्र के तौर पर 85 सालों में अभूतपूर्व हलचल से गुजर रहा है। तीन साल पहले इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी कि सत्ता के जाने-पहचाने स्तंभों को सार्वजनिक और अपमानजनक ढंग से कार्यालयों से हटाकर इस तरह हिरासत में लिया जाएगा। युवराज सलमान आज सऊदी युवाओं के बीच लोकप्रिय हैं, मगर आलोचक कहते हैं कि वह बड़ा दांव खेल रहे हैं, जबकि कुछ कहते हैं कि इन हिरासतों और राजकुमारों की मौतों को देखकर लगता है जैसे सऊदी अरब भारत की 16 सदी से गुजर रहा हो बस आज साधन बदले है सत्ता पाने की ललक और योजना का ढ़र्रा पुराना ही दिखाई दे रहा है।

-राजीव चौधरी

प्रतिष्ठा में,

लगातार बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

अब तक 31 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 23360150, मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह